बेटा हमेशा सच बोलना

शैख मुहम्मद इशाक मुलतानी. हवाला: एक हज़ार अनमोल मोती उर्दु से मज़मून का खुलासा लिप्यान्तरण किया गया हे.

नोट: आप से दरखास्त है की इसे भाषा या ग्राम्मर का अदब ना समझे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

हजरत शैख अबदुल कादिर जीलानी (रह) की उमर जब चौदह साल की हुई तो उनकी अम्मी ने आप को आला दीनी तालीम हासिल करने की गर्ज से बगदाद जाने वाले काफिले के साथ रवाना कर दिया, रवानगी से पहले आपकी अम्मी ने उनकी आसतीन मे चालीस अशरफीया टांक दी ताकी जरूरत के वकत उनको इस्तेमाल कर सके.

हुवा ये की रास्ते मे डाकुओ ने इस काफिले पर हमला कर दिया और लुट मार करने लगे, लूट मार करते हुवे कुछ डाकू आपके पास भी आये और पूछा तुम्हारे पास और किया हे? आपने जवाब दिया की मेरे पास चालीस अशरफीया हे, डाकुओ ने समझा की बच्चा हे शायद मजाक कर रहा हे, इसलिये वो आपको अपने सरदार के पास ले गये और सारा वाकिया बयान किया.

सरदार ने भी आपसे यही सवाल किया आपने उसको भी यही बताया की मेरे पास चालीस

अशरफीया हे, सरदार ने कहा अगर अशरफीया हे तो फिर दिखावो ताकी मे भी देखू की अशरफीया कहा हे आपने उसी वकत अपनी असतीन को खोला और तमाम अशरफीया निकाल कर डाकुओ के सामने रख दी, ये देखकर तमाम डाकू हैरान रह गये, सरदार कहने लगा ए लडके हमने तेरी तलाशी ली तो हमे तुम्हारी जेबो मे कुछ ना मिला, हमारे गुमान मे भी नही था की तेरे पास इतनी सारी अशरफीया होगी, अगर तू जाहिर ना करता तो अपनी अशरफीयो को हमसे बच्चा सकता था, लेकिन तूने ऐसा क्यू किया की छुपी हुई अशरफीयो को हमारे सामने रख दिया.

आपने फरमाया मे तालीम हासिल करने की गर्ज से बगदाद जा रहा हू, रवानगी के वकत मेरी अम्मी ने मुझे बहुत सख्ती से इस बात की ताकीद की थी की बेटा चाहे कुछ भी हो जाये हमेशा सच बोलना और सच का दामन कभी ना छोडना.

डाकुओ ने जब ये बात सुनी तो उनके दिल की दुन्या ही बदल गयी, उन पर इस बात का ऐसा असर हुवा की उन्होने उसी वकत बुरे कामो से तौबा करके अच्छाई का रास्ता अपना लिया और हमेशा हमेशा के लिये सीधे रास्ते पर आ गये.